डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की विचारधारा और उनके विचारों की अभिव्यक्ति-

"मिले सुर हमारा-तुम्हारा"

डॉ. गायत्रीदेवी जे. लालवानी
आसिस्टंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
श्री कृष्ण प्रणामी आर्ट्स कॉलेज, दाहोद
गुजरात
सचलभाष- 7984498390

डॉ. आम्बेडकर को कौन नहीं जानता? अपने–आप में यह प्रश्न बहुत गहरा है। अम्बेडकरजी को कोई संविधान शिल्पी कह देता है तो कोई दलितों का मसीहा। डॉ. भीमराव बाबा साहब अम्बेडकर की विचारधारा क्या है? इसके उत्तर में एक सरल सी बात कि सबको एक समान स्तर पर देखना, महिला–पुरूष, जाति–धर्म के भेद से ऊपर उठकर एक पूरे समाज को देखना। 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर उस विचारधारा को हमारे समक्ष प्रस्तुत करते है। जो मानवता में विश्वास करती है। जिसका मूल ही सभी की समानता है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अनुसार सबकी भागीदारी और सबकी समानता बहुत जरूरी है।

व्यक्ति को दास बनाकर उसे गुलाम बनाकर, कई बादशाह बने हैं। लेकिन व्यक्ति को सदियों की गुलामी से मुक्त कराकर जिसने इंसान बनाया हो, जिन्होंने इंसान का दर्जा दिलाया हो। ऐसे भारतरत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने देश का संविधान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। गरीब, दलित एवं महिलाओं को उनके अधिकारों से सजग करवाया। समाज की उन कुरीतियों को जड़ से मिटा दिया, जो समाज के लिए हानिकारक बनी हुई थी।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जातिवाद के काँटे को मूल से उखाड़ देना चाहते थे। वे अलगाववाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, नस्लवाद से कई परे मानवतावादी दृष्टिकोण रखनेवाले महापुरूष थे। जातिवाद के लिए उनका कथन देखिये–"जातिवाद का दानव तब तक नहीं मरता, जब तक आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन सपना ही रहेगी। क्योंकि जातिवाद, वर्ण–व्यवस्था न तो श्रम विभाजन पर आधारित है, न प्ररकृति प्रदत्त है। स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना जीवन मूल्यों में मूलभूत परिवर्तन लाने पर ही सम्भव है।"1

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का दृष्टिकोण, उनकी विचारधारा मानववादी रही है। उनका उदेश्य शोषित, पीड़ीत एवं दलित समाज का विकास करना एवं उन्हें उनके मानव अधिकारों से सजग करानाएवं मानवीय अधिकार दिलाना था। उनके चिन्तन में स्वतंत्रता, समानता, बंधुता व न्याय के दर्शन होते है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जीवन–दर्शन ही उनका दृष्टिकोण था, उनकी विचारधारा थी। जिसे हम निम्न रूप से देख सकते है।

- मानवीय मुक्ति और स्वतंत्रता सर्वोपरि
- वर्ण–व्यवस्था, जाति–पाति का विरोध
- सामाजिक न्याय एवं बंधुत्व का भाव
- सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध
- सामन्ती प्रथा का विरोध, ब्राह्मणवाद का विरोध
- पूँजीवाद का विरोध

- वर्णविहीन, वर्गविहीन समाज के पक्षधर
- भाषावाद, क्षेत्रवाद, लिंगवाद का विरोध
- समस्त मानव समाज में समानता के पक्षधर

यदि अम्बेडकरजी को जानने का प्रयास किया जाए, उन्हें जानने का प्रयत्न किया जाए तो भारत के कई बड़े विद्वान साहित्यकारों ने अम्बेडकर जी को केन्द्र में रखकर कई ग्रंथों की रचना की है। सन् 2019 में साहित्य संगम, इन्दोर से प्रकाशित प्रसिद्ध साहित्यकार सदाशिव कौतुक जी की 'मिले सुर हमारा तुम्हारा' पुस्तक द्वारा बाबासाहब की विचारधारा को पाठकवर्ग तक पहुँचाने का सराहनीय प्रयास हुआ है। सदाशिव कौतुकजी ने इस पुस्तक को 17 अध्यायों में विभक्त कर बाबा साहब के सकारात्मक दृष्टिकोण को जन–मन तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। वे पुस्तक की भूमिका में स्वयं लिखते हैं–"मैं किसी एक धर्म का न पक्षधर हूँ, न ही विरोधी, न किसी जाति समाज का विरोधी। मैं मानव धर्म का पक्षधर हूँ और न्याय का पक्षधर हूँ। मूलतः मैं साहित्यकार हूँ। साहित्यकार की सोच व्यापक होती है। मुझे बाबा साहब डा ◌ीभीमराव आम्बेडकर की व्यापक सोच ने प्रभावित किया, इसलिए अपने साहित्यिक दायित्व का निर्वाह कर रहा हूँ। शोषण मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, समानतावादी सोच ने मुझे लिखने के लिए आह्वान किया। बाबा साहब पर कई विद्वानों ने कई ग्रंथ लिखे हैं फिर भी उनके महान योगदान पर कई–कई ग्रंथ लिखे जाने की आज आवश्यकता है। बाबा साहब के सत्यनिष्ठ कर्म पर जब लिखो तब विचार का नया धरातल देता है, मुझे भी लगा कि समानता की राष्ट्रीय सोच वाले ऐसे देवदूत पर अपने विचार व्यक्त करना चाहिए। उनके कर्म ने मुझे यह प्रेरणा दी और कलम चल पड़ी।"2

इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में सदाशिव कौतुकजी ने वर्णभेद एवं असमानता की गहरी खाई पर प्रकाश डाला है। उन्होंने आदिकाल, मध्यकाल से होते हुए आधुनिक काल में दलितों, शोषितों की स्थिति का वर्णन किया है। आम्बेडकरवादी विचारधारा समाज की इस गैर बराबरी वाले धर्म को किस दृष्टिकोण से देखती है इस सन्दर्भ में वे लिखते हैं–"डा ◌ीभीमराव आम्बेडकर विचारधारा समाज में आमूल परिवर्तन चाहती थी। यह विचारधारा समाज में प्रत्येक मानव को एक समान देखना चाहती थी हिंदू शास्त्र एवं जनम आधारित वर्ण व्यवस्था को नकारती है।"3 इसी बात को समझाते हुए लेखक लिखते हैं–

"वर्ण–रंग से मानवा–ऊँच–नीच ना होय, काली–गोरी गाय का दूध एक सा होय"4

इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में सदाशिव कौतुकजी ने बाबा साहब की गहन चिंतनमय सोच पर प्रकाश डालते हुये अपने विचारों को वाणी दी है। वे बाबा साहब की दूरदृष्टि, राष्ट्रीय एकत्व के भाव एवं संवैधानिक दृष्टिकोण के बारे में लिखते है–"डा ◌ीबाबा साहब आम्बेडकर का कर्म किसी भी युग में भुलाया नहीं जा सकता। बाबा साहब की गहन सोच में गरीबों–दलितों, पिछड़ों को अपने पैरों पर खड़ा करने के साथ देश को संगठित और सशक्त करने का एक विराट चिंतन था। उनकी सोच सदियों आगे झांक के विश्व में राष्ट्र को महाशक्ति के रूप में खड़ा करने की थी, जिसमें वे काफी सफल हुए। उनकी दूरदृष्टि एक ऐसे वंचित वर्ग की ओर गई जिसे दल–दल से ऊपर उठाकर देश की मुख्यधारा में लाना जरूरी था। अलग जातियों में बँटे इस वंचित समूह के अभाव में एक राष्ट्र की कल्पना करना असंभव था। वरना राष्ट्र भेदभाव के कारण फिर टुकड़ों में शायद बँट सकता था। राष्ट्रीयता के मार्ग में यह बहुत बड़ी बाधा थी। बाबा साहब ने राष्ट्रीय–एकता में बाधक सबसे कमजोर नस पर हाथ रखकर उसके उपचार का रास्ता खोजा और कमजोर–दलित–शोषित वर्ग को योग्य और सक्षम बनाने का प्रण करके संकल्प ले लिया। उनका यह स्वप्न केवल वर्ग विशेष तकछोटी सोच वाला नहीं था। सच कहा जाए तो संपूर्ण राष्ट्र को सशक्त बनाने का स्वप्न था।"5 देश में सभी इंसान समान होंगे, तभी तो एकत्व के सूत्र में देश बँध सकेगा।

पुस्तक के तीसरे अध्याय विश्रृंखलित समाज में बाबा साहब किस प्रकार देश के कल्याण के लिए अपना दिन–रात एक कर यह अध्ययन करते रहे कि, देश को समानता के सूत्र में कैसे बाँधा जाए। लेखक लिखते हैं–"बाबा साहब भीमराव आम्बेडकर दलित–पिछड़े एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग का अलग राष्ट्र नहीं बनाना चाहते थे। वे तो सिर्फ यह चाहते थे कि राष्ट्र का हर वर्ग

शिक्षित हो, अपने पैरों पर खड़ा हो, संघर्षशील हो, संगठित हो। भेदभाव और छूआछूत खत्म होगा, जन–जन तक शिक्षा पहँच जाएगी, बेकारी दूर हो जाएगी तो स्वमेव ही राष्ट्र संगठित होगा, अखंड होगा और उन्नत होगा। राष्ट्र के ताकतवर होने का आधार या मुख्य इकाई और नींव तो जनता ही है। .....एक बार की घटना है विदेशी पत्रकारों का दल भारत में आया था। पहले दल महात्मा गाँधी से मिलने गया तो पता चला कि बापू सोए हुए हैं। वह दल वहाँ से बाबा साहब आम्बेडकर केय हाँ पहुँचा तो बाबा साहब किताबों का अध्ययन कर रहे थे। तब उन्होंने बाब साहब से पूछा कि इस वक्त गाँधीजी तो सो रहे हैं और आप अभी तक जाग रहे हैं? तब बाबा साहब ने कहा कि गाँधीजी जिस कौम का नेतृत्व करते हैं वह कौम जागृत है इसलिए शायद वे सो रहे हैं, किंतु मैं जिस कौम का जिस वर्ग का नेतृत्व कर रहा हूँ वह सोई हुई है, मैं जागकर उपाय सोच रहा हूँ कि उस सोए हुए वर्ग को कैसे जगाऊँ, कैसे उसे उसके पैरों पर खड़ा करके मनुष्य का जीवन जीने योग्य बनाऊँ। यह उनकी मानवतावादी और राष्ट्रवादी सोच थी। उनका कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नही था।"6 कहने का अर्थ इतनी गहरी बात को इतनी सहजता से कह देना, मन में बस हाशिए के लोगों को देश की मुख्यधारा से जोड़ने की इच्छा और उसे पूर्ण करने हेतु तन–मन से लग जाना। यह सब इतना सरल नहीं था। पर उनका दृष्टिकोण सबसे अलग था। इसीलिए उन्होंने देश के लिए, देशवासियों के लिए अपने दिन–रात एक कर दिए।

पुस्तक के चौथे अध्याय में लेखक जातिवाद के दंशो पर अपने विचार प्रस्तुत करते है। जाति भारतीय समाज का अहम हिस्सा रही है। इसी जातिवाद के कारण दलित, शोषित, पिछड़ा वर्ग, आदिवासी भाइयों–बहनों का जीवन प्रताड़ित रहा, उन्हें जो सहन करना पड़ा है या आज भी सहन करना पड़ रहा है। यह जातिवाद का वही दंश है जो सदियों से ज्यों का त्यों बना हुआ है। इन सबके जीवन से जाति कभी जाती ही नहीं है। इस वर्ग को देश की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य बाबा साहब ने किया। लेखक लिखते हैं–"जब बाबा साहब जैसे मसीहा ने दल–दल से बाहर लाने का कानून बना दिया तो इस पीड़ीत असहाय वर्ग को जीवनदान मिल गया। .....इस उपेक्षित वर्ग को शिक्षित और सक्षम बनाए बगैर भारत अधूरा और आजादी भी अधूरी थी। आजादी हमारे हाथों आने के बाद यह कदम उठाना बहुत आवश्यक था, जिसे बाबा साहब ने सबकी सहमति से साकार कर दिखाया। दलित वर्ग की राष्ट्र की मुख्यधारा में अनुपस्थिति एक तरह का कलंक था। राष्ट्रीय एकता में बड़ी बाधा भी थी। बाबा साहब की इस चेतना प्रणाली ने देश को संगठित और ताकतवर बनाने का विश्व की महत्वपूर्ण घटनाओं में दर्ज करवा के दुर्लभ काम किया।"7

आज भी हम देखते हैं कि आए दिन दलितों के साथ अन्याय, दुर्व्यवहार हो रहा है। यदि बाबा साहब ने संविधान में हाशिए के लोगों के लिए स्थान नहीं बनाया होता तो शायद आज सामाजिक स्थिति सदियों से दलितों का शोषण करनेवाली यथावत् रहती। दलितों को न्याय मिला है लेकिन समाज की मनोदशा नहीं बदली। आज दलित भी दलित के बारे में नहीं सोचते। लेखक लिखते हैं कि–"दलित वर्ग को सोचना चाहिए कि जो वरदान मंदिर में बैठा हुआ भगवान नहीं दे पाया वह वरदान बाबा साहब आम्बेडकर ने दे दिया, इसीलिए उनकी घरों में मूर्ति रखना, तस्वीरें लगाना, जन्म दिन मानना, आराध्य मानना ठीक है परन्तु इन उपक्रमों से बढ़कर है उनके विचारों को जीवन में उतारना और वे जैसा भारत बनाना चाहते थे उसके अनुरूप जीवन को ढालना बाबा साहब को सही श्रद्धाजंलि होगी। सोचना होगा कि यदि बाबा साहब की यह महान पहल न होती तो दलित वर्ग–पिछड़ा आदिवासी वर्ग नारकीय जीवन से बाहर नहीं निकल सकता था। जो लोग आज भी विरोध कर रहें है, 70 वर्ष बाद भी उनकी मानसिकता में बदलाव नहीं आया, क्या वे लोग इतना बड़ा प्रतिसाद दे सकते थे। इतना बड़ा बदलाव ला सकते थे।"8 वाकई आज हम सभी को यह सोचना आवश्यक है कि, जहाँ मानसिकता में आज तक बदलाव नहीं आ पाया जहाँ आज भी दलितों के लिए घृणा भाव बने हुए हैं ऐसे लोग कभी भी इस भेदभाव को खत्म नहीं कर सकते, बाबा साहब ने अगर संवैधानिक रूप से इस ओर कदम न बढ़ाए होते तो आज भारत की स्थिति उन पिछड़े देशों के रूप में ही होती। यदि देश आज प्रगति के चरमोत्कर्ष पर है तो यह उस महानुभाव के कारण ही संभव हो पाया है।

देश की एकता को तोड़ने के लिए आज भी कई ऐसे देशद्रोही लोग हैं जो कहीं न कहीं देश को जाति–धर्म के नाम पर बाँटने का कार्य करते हैं। भारतीय समाज की रूढ़ीवादी मानसिकता के कारण दलितों को कैसे प्रताड़ित किया जाता है इस संदर्भ में सदाशिव कौतुकजी लिखते हैं–"दलितों के आरक्षित पदों को नहीं भरा जाना दलित अधिकारों का हनन है। बाबा साहब के नाम से छेड़छाड़ कर के लोगों की भावनाओं को भड़काना बिना वजह विवाद खड़ा करना अच्छा नहीं लगता। दलित सांसदों की सुनवाई

नहीं होना उन्हें अपमानित करना, कुछ राज्यों में दलितों को झूठे मुकदमों में फँसाना, दलितों को घर से बेघर करना, उनसे मारपीट करना दलितों की शिकायतें नहीं सुनी जा जाने का मतलब है कि सवर्णो की सोच में अभी तक परिवर्तन नहीं आया है। हम विश्वगुरू बनने का कौन सा स्वप्न देख रहे हैं यह बात समझ में नहीं आ रही है। बाबा डॉ. भीमराव आम्बेडकर की मूर्तियों के क्षति पहुँचाना, उनकी मूर्ति का रंग बदल देना बड़ी घटिया सोच की बातें है, इस तरह की हरकतों से असंतोष व्याप्त होता है और झगड़े फसाद जन्म लेते हैं, जिससे समाज का व देश का ही नुकसान होता है। पुलिस की भर्ती के लिए साक्षात्कार में दलित युवकों के सीने पर एसी–एसटी लिखना विवादास्पद कार्य है। ऐसी हरकतें क्यों की जानी चाहिए। पहचान का यही तरीका है क्या? मनवता के दृष्थिकोण से यह गलत तरीका है। हमारी राष्ट्रीय सोच में बदलाव नहीं लाना राष्ट्र की एकता के लिए घातक है।"9

कुछ आदर्श व प्रेरक प्रसंगों को भी इस पुस्तक में लेखक ने इसीलिए देना उचित समझा कि, हमारे भारतीय समाज में जितने भी बड़े विद्वान, महानपुरूष, संत आदि हुए उन सभी ने देशहित के, मानव कल्याण के कार्य किये। उन्हे उनकी जाति से नहीं, उनके कर्मो से, उनके चरित्रों से उनको पहचाना गया। यदि देश के सवर्ण समाज की मानसिकता में आज भी परिवर्तन नहीं आ रहा तो उसका एक ही कारण है कि, उन्होंने कभी आत्ममंथन किया ही नहीं। लेखक लिखते हैं–"किसी समाज में किसी भी राष्ट्र में एक वर्ग दूसरे वर्ग से श्रेष्ठ नहीं होता। ऐसा कहीं नहीं कहा गया है। इस दुनिया में सभी मनुष्य, मनुष्य है। अपने–अपने कर्मो ने जाति का नाम निश्चित कर दिया है, परन्तु जीने के लिए समानता सब के खाते में होनी चाहिए। इस प्रगतिशील युग में जाति और छूआछूत प्रथा नष्ट होना चाहिए, जिनके पुरखों ने अस्पृश्यता चलाने का पाप किया है उन्हीं को प्रायश्चित के रूप में इसे खत्म करने के लिए अछूत माने जाने वाले लोगों की सेवा करनी चाहिए।"10 यदि वास्तव में पूरा भारतीय समाज जातिवाद के काँटे को उखाड़ के फेंक दे तभीं जन–जन स्वय को समान स्तर पर अनुभव करेगा। लेखक आम्बेडकर के स्वप्न को साकार करना चाहते हैं वे लिखते हैं– "जिस दिन जातिवाद मिट जाएगा, बराबरी का समाज बन जाएगा, अंधविश्वासी और कट्टर समाज समाप्त होकर मानव जाति का भला चाहने वाला वैज्ञानिक समाज बन जाएगा, उस दिन सही मायने में राष्ट्र स्वतंत्र– आजाद राष्ट्र कहलाएगा, वरना राष्ट्र की आजादी अधूरी ही रहेगी।"11

सदाशिव कौतुकजी ने इस पुस्तक के माध्यम से जन–मन तक बाबा साहब की विचारधारा को पहुँचाया है परन्तु अब यह पाठकवर्ग का फर्ज बनता है कि, वे बाबा साहब के विचारों को अपने जीवन में अपनाते हुए नित्य प्रगति के स्तर तय करें, यदि देश का प्रत्येक नागरिक देशहित में, बाबा साहब के स्वप्न को साकार करने के लिए कटिबद्ध हो जाए तो देश फिर से सोने की चिड़ियाँ बन जाएगा।

सन्दर्भः–

1 डॉ. अम्बेडकर और समाज व्यवस्था- कृष्णदत्त पालीवाल, पृ-14
2 'मिले सुर हमारा–तुम्हारा' - सदाशिव कौतुक - भूमिका से
3 वही–पृ–19
4 वही–पृ–15
5 वही–पृ–21
6 वही–पृ–27
7 वही–पृ–32
8 वही–पृ–37
9 वही–पृ–48
10 वही–पृ–95
11 वही–पृ–12